موضوع الخطبة : **الناقض الثالث:** (من اعتقد أن غير هدي النبي (صلى الله عليه وسلم) خير من هديه فقد كفر، وكذلك من اعتقد أن حكم غير الله خير من حكم الله، كالذين يفضلون حكم الطواغيت والقوانين الوضعية على حكم الله)

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

तृतीय भंजक: (जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग आप के मार्ग से अच्छा है,तो उस ने कुफ्र किया,इसी प्रकार से वह व्यक्ति (भी काफिर है जो) यह आस्था रखे कि गैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा) का आदेश (निर्णय) अल्लाह के आदेश (निर्णय) से अच्छा है,जैसे वे लोग जो ताग़ूतों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) के निर्णय को और स्वनिर्मित नियमों को अल्लाह के निर्णय पर प्राथमिकता देते हैं)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَه إِلا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ एवं सबसे पूर्ण मार्ग है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उस का आदर करो,उस की आज्ञा मानो और उस के अवज्ञा से बचते रहो,और जान लो कि मोह़म्मद रसूलुल्लाह की गवाही देने से इस बात पर ईमान लाना अनिवार्य हो जाता है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे सर्वश्रेष्ठ और सबसे पूर्ण है,इस का आशय वह वह मार्ग है जिसे नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आस्था,प्रार्थनाओं,मामलों,नैतिकता,निर्णयों एवं राजनीतिक आदि में अपनाया,जिस का उल्लेख क़ुरान एवं ह़दीस में आया है।

अल्लाह के बंदो!नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग ही सबसे सर्वश्रेष्ठ मार्ग है,क्योंकि आप ने यह मार्ग अल्लाह तआ़ला से प्राप्त किया है,और यह मार्ग जीवन के समस्त शोबो को

शामिल है,प्रार्थनाएं,नैतिकता,राजनीतियां,निर्णयों,सामाजिक,शैक्षिक व प्रशिक्षण आदि समस्त पहलू इस में आते हैं।

इस का प्रमाण कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे अच्छा मार्ग है,अल्लाह का यह कथन है:

(لقد كان لكم في رسول الله أسوة)

अर्थात:तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है।

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने उपदेश में फरमाया करते थे: (सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है और सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद का मार्ग है)।

आस्था के अध्याय में सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है

अल्लाह के बंदो!नबी की जीविका का अध्ययन करने वाले को पता चल जाता है कि आप का मार्ग ही सबसे अफजल मार्ग है,अत: आस्था के अध्याय में हम देखते हैं कि वह इस्लामी आस्था जिसे आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रस्तुत किया और जिस की शिक्षा दी वह उन समस्त अध्यायों एवं मसले को

शामिल है जिन की अल्लाह पर,उस के दुवदूतों,पुस्तकों,रसूलों,आखिरत के दिन और तकदीर के भला-बुरा पर ईमान लाने के बाब में मनुष्य को आवश्यकता पड़ती है,यह आस्था पूर्व के पैगंबरों के आस्था में स्वस्थ बुद्धि के अनुसार नवीनता लाता है और मुद्रास्फीति एवं अपस्फीति से रोकता है।

इ़बादत (वंदना) के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

इ़बादत (वंदना) के अध्याय में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है,इस में न कोई मुद्रास्फीति है न कोई अपस्फीति , न संसार त्याग है और न आलसा,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:नि:संदेह इस्लाम धर्म बहुत आसान है।और जो व्यक्ति धर्म में कठोरता करेगा तो धर्म उस पर गालिब आ जाएगा,इस लिए संयम अपनाओ और (एतेदाल के साथ) निकट रहो और प्रसन्न हो जाओ।[1]

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक सह़ाबी से फरमाया जो इ़बादत (वंदना) में अपने नफ्स को थका देना

---

[1] इस ह़दीस को बोखारी (३९) ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

चाहते थे: (तुम्हारे नफ्स का भी तुम पर अधिकार है)।[2] और जब किसी सह़ाबी ने कहा कि वह मीट नहीं खाएंगे,किसी ने कहा कि:मैं महिलाओं से दूर रहुंगा और कभी विवाह नहीं करुंगा,तीसरे ने कहा:मैं रोज़ा रखुंगा और इफतार नहीं करुंगा,चौथे ने कहा:मैं रात भर क़्याम करुंगा,तो आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से कहा:किन्तु मैं रोज़े भी रखता हूं और इफतार भी करता हूं,नमाज़ भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं,इस के अतिरिक्त महिलाओं से निकाह भी करता हूं,जिस ने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा वह मुझ से नहीं है।[3]

नैतिकता के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

नैतिकता के अध्याय में हम देखते हैं कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का नैतिक सबसे पूर्ण है,इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं,क्यों कि जिस ने आप को प्रशिक्षण व शिक्षा दी वह

---

[2] इस ह़दीस को अह़मद (६/२६८) आदि ने आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है और "المسند"(२६४०८) के शेधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है,इस ह़दीस का मूल बोखारी व मुस्लिम में अबू ह़ोज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु और अन्य सह़ाबा से वर्णित है।

[3] इस ह़दीस को बोखारी (५०६३) और मुस्लिम (१४०१) ने तकरीबन उपरोक्त शब्दों में अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

अल्लाह तआ़ाला है,और अल्लाह ने ही आप का सुंदर व्यवहार की गवाही भी दी,अल्लाह ने आप से फरमाया: (وإنك لعلى خلق عظيم)

अर्थात:तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।

परिवार वालो,सह़ाबा और पड़ोसियों के प्रति नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का जो नैतिक एवं व्यवहार था,उस पर विचार करने से मालूम होता है कि आप हमेशा मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलते थे,क्षमा से काम लेते,यहां तक कि आप ने उस यहूदी महिला को भी क्षमा कर दिया जिस ने आप के खाने में जहर मिला दिया और उस का प्रभाव आप ने अपने मृत्यु के समय महसूस किया,आप लोगों के प्रति कृपालु एवं दयालु थे,यहां तक कि युद्ध में शत्रुओं के साथ भी दया एवं कृपा का व्यवहार करते,अत: ऐसे व्यक्ति की हत्या करने से आप ने मना फरमाते जो युद्ध में भाग न लिया हो,जैसे बूढ़े,महिलाएं एवं बच्चे,धन लूटने से रोकते,विश्वासघात से रोकते,अर्थात ग़नीमत के धन के बंटवारे से पहले कुछ लेने से रोकते,और अल्लाह के आदेश के अनुसार आप गनीमत के धन को बांटते थे,मृत्यु का मुस्ला करने से रोकते, अर्थात मृत्यु की शकल बिगाड़ने और उस से

प्रतिशोध लेने से मना फरमाते,वचन-भंग और गद्दारी से रोकते,और बिना किसी प्रतिकर के कैदियों को रिहा कर देते,उन में से कुछ को प्रतिशोध के लिए हत्या कर देते,कुछ को फिदया (प्रतिदान) ले के रिहा कर देते और और कुछ को मुसलमान क़ैदियों की रिहाई के बदले में रिहा कर देते,यह सब आप नीति के अनुरूप किया करते थे।

अल्लाह के बंदो!आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुंदर व्यवहार का उल्लेख तौरैत एवं इंजील में भी आया है,अत: अ़ता बिन यसार का बयान है:मैं ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ीअल्लाहु अंहुमा से मिला और कहा कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो विशेषता एवं गुण तौरैत में है,मुझे वह बता दी जिए।उन्होंने फरमाया:

"अल्लाह की क़सम!आप के कुछ गुण तौरैत में वही हैं जो क़ुरान में बयान हुए हैं। (ऐ नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम!हम ने आप को गवाही देने वाला,शुभ सूचना देने वाला,डराने वाला बना कर भेजा)और أُمِّيِّينَ [4]की निगहबानी करने वाला बना कर

---

[4] अर्थात अ़रबों की संरक्षण करने वाला,अ़रबों को اُمِّی इस लिए कहते हैं कि उन के युग में लिखने पढ़ने का चलन बहुत कम था।देखें: इब्ने असीर की النهاية

भेजा है।तू मेरा बंदा और मेरा रसूल है।मैं ने तेरा नाम متوکل रखा है,न तू दुश्चरित्र है और न कठोर हृदय वाला,न तू बाज़ारों में शोर करने वाला है और न बुराई का बदला बुराई से देता है बल्कि क्षमा एवं दया करता है,अल्लाह तआ़ला उसे उस समय तक बिल्कुल मृत्यु नहीं देगा जब तक कि उस के द्वारा एक टेढ़ी क़ौम को सीधा न कर दे वह इस प्रकार से कि वह कहने लगें और उस के द्वारा नेत्रहीन देखने वाले हो जाएं और बेहरे कान खोल दिए जाएं और अनभिज्ञ अवगत किए जाएं।[5]

मामलों के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

व्यापारिक मामलों में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग प्रत्येक प्रकार के मामलों को शामिल है,जैसे बेचना खरीदना,किराया,वकालत एवं उधार लेने देन आदि।इसी प्रकार से आप की जीविका खरीदने बेचने के उन समस्त प्रकारों की स्पष्टता में भी पूर्ण है जो अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक हैं,जैसे सूद,धोखा एवं रिश्वत आदि,इब्नुल क़य्यिम रह़िमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक "زادالمعاد" में तकरीबन अस्सी (८०) पृष्ठों में

---

[5] इस ह़दीस को बोखारी (२१२५) ने रिवायत किया है।

अनेक अध्याय स्थापित किए हैं जिन में खरीदना व बेचना से संबंधित तरीके बयान किए गए हैं।

राजनीति से अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

राजनीति के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे पूर्ण मार्ग है,विशेष एवं अमानतदार लोगों से आप दीनी मामलों में सलाह लिया करते थे,कभी कभी अपनी पत्नियों से भी परामर्श मांगते,जिस प्रकार से आप ने बदर,खंदक़ और ह़ोदैबिया आदि के अवसर से किया,इस से आप को सही राय जानने में सहायता मिलती और विजय प्राप्त होता,आप काफिरों के साथ अमन व शांति का अनुबंध करते,उन के राजदूतों के साथ सुंदर व्यवहार करते,जो काफिर आप के पास आता आप उसे शरण प्रदान करते यहां तक कि वह अपने शरण की ओर लोट जाता,उन के साथ जो ठोस अनुबंध करते उसे पूरा करते,आप वचन-भंग और विश्वासघात से संपूर्ण मुक्ति में प्रसिद्ध थे,यद्यपि काफिर विश्वासघात क्यों न करदें (फिर भी आप ऐसा नहीं करते),युद्ध में मैदानों में अत्याचार करने वालों को क्षमा कर देते,जब मक्का विजय हुआ और आप को वहां के

निवासियों पर प्रभुत्व प्राप्त हुआ और शक्ति एवं सरदारी आप के हाथ में आगई,तो आप ने समस्त लोगों को क्षमा कर दिया,जब कि यही वे लोग थे जिन्होंने आप से युद्ध किया और आप को मक्का से निकाल बाहर किया,आप के साथ और आप के सहाबा के साथ क्या क्या नहीं किया,किन्तु आप ने उन सब को क्षमा कर दिया,जबकि आप उन से प्रतिशोध लेना चाहते तो आसानी से ले सकते थे,आप का न कोई निंदा होता और न कोई पकड़।

निर्णय एवं न्याय के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

निर्णय और न्याय के बाब में बनी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे अधिक निष्पक्ष एवं पूर्ण मार्ग है,इब्नुल क़य्यिम रहि़महुल्लाह ने अपनी पुस्तक "زاد المعاد في هدي خير العباد" में तकरीबन पांच सौ (५००) पृष्ठों में अध्याय स्थापित किये हैं जिन में न्याय से संबंधित आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग बयान किया है।

चिकित्सा एवं उपचार के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है

चिकित्सा व उपचार के बाब में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग अकमल है,इब्नुलक़य्यिम रहि़महुल्लाह ने अपनी पुस्तक"زادالمعاد" में तकरीबन चार सौ (४००) पृष्ठ के अंदर दिली एवं शारीरिक इलाज का पैगंबरी तरीका बयान किया है।

अल्लाह के बंदो!अनेक बुद्धिमान काफिरों ने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके के बारे में यह गवाही दी है कि वह सर्वोत्तम तरीका है,उन में से अनेक लोगों ने इस्लाम स्वीकार भी किया है,क्योंकि उन को विश्वास हो गया कि ऐसा व्यापक मार्ग कोई मनुष्य अपनी ओर से प्रस्तुत नहीं कर सकता,पर वही जो नबी हो जिसे अपने रब की सहायता प्राप्त हो।

अल्लाह के बंदो!यह स्पष्ट करने के लिए एक लाभदायक प्राकथ्थन है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदर्श एवं मार्ग ही सबसे कामिल एवं उत्तम मार्ग है,जो व्यक्ति इसे समझ ले उस के समक्ष नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम एवं आप के मार्ग रक्षा का दरवाजा खुल जाएगा।

अल्लाह तआ़ाला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग एवं तरीका प्रत्येक स्थान एवं युग के लिए उपयुक्त एवं उचित है

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग हर युग एवं स्थान के लिए उपयुक्त एवं उचित है,वह एक ठोस प्रणाली है जिस में कोई परिवर्तन नहीं आती,क्योंकि वह अल्लाह तआ़ाला की ओर से अवतरित वह्य (प्रकाशना) पर आधारित है,वह अल्लाह जो अपने ज्ञान व नीति एवं कृपा में पूर्ण है,जो

लोगों के लिए भलाई की इच्छाओं में भी पूर्ण है,नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वह्य को लोगों तक पहुंचा दिया,यही अल्लाह का सीधा मार्ग और उस का संतुलित धर्म है जिसे अल्लाह ने अपने बंदों के लिए पसंद फरमाया और उस के सिवा कोई धर्म अल्लाह को पसंद नहीं।

जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग अफजल है तो वह काफिर है,अथवा यह आस्था रखे कि अल्लाह के सिवा किसी और का निर्णय और आदेश अल्लाह के निर्णय एवं आदेश से अच्छा है तो वह भी काफिर है,जैसे वे लोग जो तागूतों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) के आदेश और स्वनिर्मित नियमों को अल्लाह के आदेश पर पराथमिकता देते हैं

उपरोक्त विवरणों के अनुसार जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग एवं तरीका नबी के मार्ग एवं तरीके से सर्वश्रेष्ठ है तो वह काफिर है,क्योंकि ऐसा व्यक्ति वास्तव में अल्लाह की नीति एवं शरीअ़त की निंदा करता है,उदाहरण स्वरूप जो धर्मनिरपेक्षता,उदारतावाद और लोकतंत्र जैसे मनुष्य के बनाए

हुए जीवन प्रणाली को इस्लामी शरीअ़त पर प्राथमिकता देता है,अथवा यह आस्था रखे कि मनुष्य के बनाए हुए नियम एवं कानून इस्लामी शरीअ़त से श्रेष्ठ हैं,अथवा यह कि इस्लामी प्रणाली बीसवी शदाब्दी में लागू होने के योग्य नहीं,अथवा यह कि इस्लामल प्रणाली मुसलमानों की पिछड़ेपन का कारण है,अथवा इस प्रणाली को रब और बंदा के आपसी संबंध में सीमित करके जीवन के अन्य भागों से उसे बाहर करदे,अथवा यह राय रखे कि चोर का हाथ काटने अथवा विवाहित बलात्कारी को संगसार (पत्थर मार कर हत्या करना) करने जैसे अल्लाह के आदेश आधुनिक युग के लिए उचित एवं उपयुक्त नहीं हैं,अथवा यह आस्था रखे कि मामलों अथवा हुदूद (इस्लामी सीमएं) आदि में इस्लामी शरीअ़त के अतिरिक्त अन्य प्रणाली के द्‌वारा निर्णय करना जाएज़ है,तो ऐसा व्यक्ति काफिर है,क्योंकि वह इस राय के द्‌वारा मखलूक के निर्णय को खालिक़ (रचनाकार) पर प्राथमिकता देता है और जाहिलियत (अंधकार युग) के निर्णय से प्रसन्न होता है और इस बात से प्रसन्न होता है कि ताग़ूतों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) और उस का निर्णय अल्लाह और उस के रसूल के निर्णय से श्रेष्ठ है,और

अल्लाह ने जिस प्रकार से उस का खंडन और तकफीर (काफिर मानना) करने का आदेश दिया है,उस पर अ़मल नहीं करता:

(فمن يكفر بالطاغوت ويؤمن بالله فقد استمسك بالعروة الوثقى لا انفصام لها)

अर्थात:अत: अब जो तागूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

तथा उस ने उस चीज़ को मबाह़ (जिसका करना वैध हो) कर दिया है जिसे अल्लाह ने पूर्ण रूप से ह़राम (अवैध) कर दिया है और जो व्यक्ति अल्लाह के ह़राम चीज़ों को मबाह़ (जिसका करना वैध हो) बताए वह अल्लाह से शत्रुता रखने वाला है और सवर्सम्मति से वह काफिर है।[6]

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति रसूल का आज्ञा मानने से मुंह फेरे और आप के निर्णय से मुंह मोड़े वह मोनाफिक (द्विधावादि)है मोमिन नहीं।अल्लाह का फरमान है:

وإذا دعوا إلى الله ورسوله ليحكم بينهم رأيت المنافقين **يصدون** عنك صدودا

---

[6] **देखें: शैख इब्ने बाज़ रह़िमहुल्लाह की** (مجموع فتاوی مقالات متنوعۃ) **(१/१३२)**

अर्थात:और जब बुलाये जाते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का) तो आप मोनाफिको (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मूँह फेर रहे हैं।

इब्ने तैमिया रहि़महुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह तआ़ला ने यह स्पष्ट कर दिया कि जो व्यक्ति रसूल की आज्ञा मानने से मुंह फेरे और आप के निर्णय से मुंह चुराए तो वह मोनाफिक (द्विधावादि) है,मोमिन नहीं।और वह मोमिन है जो कहे: (हम ने सुना और आज्ञा माना),केवल रसूल के निर्णय से मुंह चुराने और किसी और का निर्णय मांगने से ईमान समाप्त हो जाता और मोनाफिकत (द्विधावाद) सिद्ध हो जाती है।[7]

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما)

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

---

[7] (مجموع فتاوی مقالات متنوعۃ) **पृष्ठ:३७,शोध:मोह़म्मद मोह़ीयुद्दिन अ़ब्दुलह़मीद**

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फ़ैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी